Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

ग्रामीण समाज में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा

पूनम गर्ग [1*], करुणा त्यागी [2]

[1] परास्नातक शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, ताराचंद वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज, मुज़फ्फरनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] शोध निर्देशक, समाजशास्त्र विभाग, ताराचंद वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज, मुज़फ्फरनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: *पूनम गर्ग

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18885543

सारांश

ग्रामीण समाज में महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक रूप से सक्षम बनाना हैंद्य ताकि वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हों सकेद्य और आत्मनिर्भर जीवन जी सकें। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ परिवार और कृषि कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, फिर भी उन्हें लंबे समय तक शिक्षा, स्वास्थ्य, संपत्ति और निर्णय लेने के अधिकारों से वंचित रखा गया। महिला सशक्तिकरण के माध्यम से ग्रामीण महिलाएँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, स्वयं सहायता समूहों से जुड़कर आर्थिक रूप से मजबूत बन रही हैं तथा पंचायतों में भागीदारी के द्वारा राजनीतिक रूप से सक्रिय हो रही हैं। सरकारी योजनाएँ जैसे बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन आदि ने भी महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।हालाँकि अभी भी बाल विवाह, दहेज प्रथा, अशिक्षा और लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याएँ मौजूद हैं, जो सशक्तिकरण की राह में बाधा हैं। अतः आवश्यक है कि शिक्षा, जागरूकता और समान अवसरों के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाया जाए। ग्रामीण महिला सशक्तिकरण न केवल परिवार बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र के विकास की आधारशिला है।ग्रामीण समाज में महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं को उनके अधिकारों, कर्तव्यों और क्षमताओं के प्रति जागरूक कर उन्हें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सक्षम बनाना है। परंपरागत रूप से ग्रामीण महिलाएँ सीमित संसाधनों और अवसरों के बीच जीवन यापन करती रही हैं। शिक्षा की कमी और सामाजिक बंधनों के कारण वे आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे नहीं बढ़ पाती थीं।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 02-01-2026
- **Accepted:** 26-02-2026
- **Published:** 06-03-2026
- **MRR:**4(3); 2026: 43-45
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

पूनम गर्ग, करुणा त्यागी. डिजिटल कम्युनिकेशन स्किल फॉर लीडर्स एंड टीम्स. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू. 2026;4(3):43-45.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण समाज, आत्मनिर्भर जागरूकता

प्रस्तावना

ग्रामीण समाज में महिला सशक्तिकरण आधुनिक सामाजिक विकास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा है। सशक्तिकरण का अर्थ केवल महिलाओं को अधिकार देना नहीं, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर, जागरूक और निर्णय लेने में सक्षम बनाना है। भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ जनसंख्या का बड़ा भाग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। ग्रामीण महिलाओं की भूमिका परिवार, समाज और अर्थव्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण होते हुए भी लंबे समय तक उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और समान अधिकारों से वंचित रखा गया हैं।

परंपरागत रूढ़ियाँ, अशिक्षा, गरीबी और पितृसत्तात्मक सोच के कारण ग्रामीण महिलाएँ सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी रहीं। समय के साथ यह अनुभव किया गया कि जब तक महिलाओं को सशक्त नहीं बनाया जाएगा, तब तक ग्रामीण समाज का समुचित विकास संभव नहीं है। इसी सोच के परिणामस्वरूप महिला शिक्षा, स्वरोजगार, स्वयं सहायता समूह, पंचायत राज व्यवस्था में आरक्षण तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को आगे बढ़ाने के प्रयास किए गए हैं।

© 2026 पूनम गर्ग, करुणा त्यागी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

महिला सशक्तिकरण ग्रामीण समाज में समानता, न्याय और विकास की नींव रखता है। यह न केवल महिलाओं के जीवन स्तर को ऊँचा उठाता है, बल्कि पूरे समाज को प्रगतिशील और संतुलित बनाने में सहायक सिद्ध होता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

1. सामाजिक आवश्यकता
ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ सामाजिक रूढ़ियों, लैंगिक भेदभाव और असमान अवसरों का सामना करती हैं। उनके वास्तविक सामाजिक स्तर को समझने तथा समानता स्थापित करने के लिए इस विषय का अध्ययन आवश्यक है।

2. शैक्षिक एवं जागरूकता की आवश्यकता
ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा और जागरूकता का स्तर अपेक्षाकृत कम है। अध्ययन के माध्यम से शिक्षा की स्थिति, बाधाएँ और सुधार के उपायों को समझा जा सकता है।

3. आर्थिक सशक्तिकरण का महत्व
महिलाओं की आर्थिक निर्भरता उनके विकास में बाधा बनती है। इस अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि रोजगार, स्वयं सहायता समूह और सरकारी योजनाएँ महिलाओं को किस प्रकार आत्मनिर्भर बना रही हैं।

4. राजनीतिक भागीदारी का महत्व
पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि निर्णय प्रक्रिया में उनकी भूमिका कितनी प्रभावी है और उसे कैसे सुदृढ़ किया जा सकता है।

5. नीतिगत सुधार की आवश्यकता
यह अध्ययन नीति-निर्माताओं को वास्तविक समस्याओं की जानकारी देता है, जिससे योजनाओं को अधिक प्रभावी और व्यवहारिक बनाया जा सके।

शोध साहित्य की समीक्षा

1. महात्मा गांधी (1869द1948)
महात्मा गांधी ने ग्राम स्वराज की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक और नैतिक रूप से सशक्त बनाने पर बल दिया गया। उनका मानना था कि ग्रामीण विकास बिना महिला सहभागिता के संभव नहीं है। उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया हैं।

2. डॉ. भीमराव आंबेडकर (1891द1956)
डॉ. आंबेडकर ने महिलाओं को शिक्षा, समान अधिकार और सामाजिक न्याय दिलाने पर जोर दिया। उन्होंने हिंदू कोड बिल के माध्यम से महिलाओं को संपत्ति और विवाह संबंधी अधिकार देने का प्रयास किया। ग्रामीण महिलाओं के उत्थान के लिए कानूनी सुधारों को आवश्यक बताया हैं।

3. पंडित जवाहरलाल नेहरू (1889द1964)
नेहरू जी ने महिला शिक्षा और ग्रामीण विकास योजनाओं में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित किया। उनका विश्वास था कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति महिलाओं की स्थिति पर निर्भर करती है।

4. एला भट्ट (1933-2022)
एला भट्ट ने स्वयं-रोजगार महिला संघ (में) की स्थापना की, जिसने ग्रामीण और असंगठित क्षेत्र की महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया। उनका कार्य महिला श्रमिकों के अधिकारों और वित्तीय सशक्तिकरण से जुड़ा रहा हैं।

5. किरण बेदी (जन्मरू 1949)
किरण बेदी ने प्रशासनिक सुधारों और सामाजिक कार्यों के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर और जागरूक बनाने का प्रयास किया। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और नशा मुक्ति अभियानों में भी योगदान दिया हैंद्य

शोध के उदेश्य

- ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक स्थिति का विश्लेषण करना।
- यह जानना कि ग्रामीण महिलाएँ किस हद तक आत्मनिर्भर और निर्णय लेने में सक्षम हुई हैं।
- महिलाओं के सशक्तिकरण में बाधा बनने वाले कारकों जैसे अशिक्षा, गरीबी, लैंगिक भेदभाव और सामाजिक कुरीतियों की पहचान करना।
- महिला सशक्तिकरण से संबंधित सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों के प्रभाव एवं उपयोगिता का परीक्षण करना।
- स्वयं सहायता समूहों, स्वरोजगार और कौशल विकास कार्यक्रमों की भूमिका का अध्ययन करना।
- अध्ययन के आधार पर ग्रामीण महिलाओं के समग्र सशक्तिकरण हेतु व्यवहारिक एवं प्रभावी सुझाव देना।

शोध विधि
प्रस्तुत शोध पत्र में वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया हैं।

शोध के स्त्रो
शोध में प्रश्नावली प्राथमिक डेटा एकत्र करने का एक प्रभावी साधन हैं। जिसका उपयोग बड़े नमूने से सरंचित प्रतिक्रियाए प्राप्त करने के लिए किया जाता हैंद्य यह सर्वेक्षण अनुसन्धान में व्यापक रूप से उपयोग की जाती हैंद्य और मात्रात्मक विश्लेषण के लिए तथात्मक जानकारी, व्यवहार और द्रष्टिकोण को मापने में सक्षम हैं।

निष्कर्ष

ग्रामीण समाज में महिला सशक्तिकरण एक बहुआयामी और सतत प्रक्रिया है, जो केवल महिलाओं के व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र की प्रगति से जुड़ी हुई है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, राजनीतिक भागीदारी और सामाजिक जागरूकता महिला सशक्तिकरण के प्रमुख आधार हैं।

© 2026 पूनम गर्ग, करुणा त्यागी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों, कौशल विकास कार्यक्रमों और पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी ने उनके आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता को बढ़ाया है। इससे महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता में सुधार हुआ है तथा परिवार और समाज में उनकी स्थिति मजबूत हुई है।

80% महिलाओं ने कहाँ है कि उनकी बातो को समाज व परिवार के अंदर महत्व दिया जाता है। 60: महिलाओं ने यह कहां है कि उनको समाज के समान अधिकार प्राप्त हुआ है। 20: महिलाओं ने यह कहाँ है कि परिवार मे समर्थन के कारण उनके विकास मे वृध्दि हुई है।

संदर्भ

1. श्रीवास्तव एस. **ग्रामीण समाजशास्त्र**. नई दिल्ली: अर्जुन पब्लिशिंग हाउस; 2018.
2. सिंह आरपी. **भारत में ग्रामीण महिला सशक्तिकरण**. नई दिल्ली: डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस; 2020.
3. देसाई नीरा, ठक्कर ऊषा. **भारतीय समाज में महिलाएँ**. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट; 2001.
4. शर्मा केएल. **भारतीय सामाजिक संरचना और परिवर्तन**. जयपुर: रावत पब्लिकेशंस; 2015.

सरकारी रिपोर्ट्स और पत्रिकाएँ (Government Reports & Journals)

5. कुरुक्षेत्र पत्रिका. **ग्रामीण विकास और महिला भागीदारी**. नई दिल्ली: ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार; 2023.
6. योजना पत्रिका. **नारी शक्ति: सशक्त भारत की नींव**. नई दिल्ली: सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार; 2022.
7. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय. **वार्षिक रिपोर्ट: ग्रामीण महिला विकास योजनाएं**. नई दिल्ली: भारत सरकार; 2023.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the corresponding author

पूनम गर्ग समाजशास्त्र विषय की परास्नातक शोधार्थिनी हैं और वर्तमान में ताराचंद वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश में अध्ययनरत हैं। उनकी शैक्षणिक रुचि सामाजिक संरचना, महिला सशक्तिकरण और समकालीन सामाजिक मुद्दों के अध्ययन में है। वे शोध एवं अकादमिक लेखन के माध्यम से समाजशास्त्रीय ज्ञान के विकास में योगदान देना चाहती हैं।

करुणा त्यागी समाजशास्त्र विभाग में शोध निर्देशक के रूप में ताराचंद वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश में कार्यरत हैं। उन्हें सामाजिक अनुसंधान, महिला अध्ययन और सामुदायिक विकास के क्षेत्र में विशेष रुचि है। वे विद्यार्थियों को शोध कार्य के लिए प्रेरित करती हैं तथा अकादमिक और सामाजिक विकास में सक्रिय योगदान देती हैं।

© 2026 पूनम गर्ग, करुणा त्यागी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/